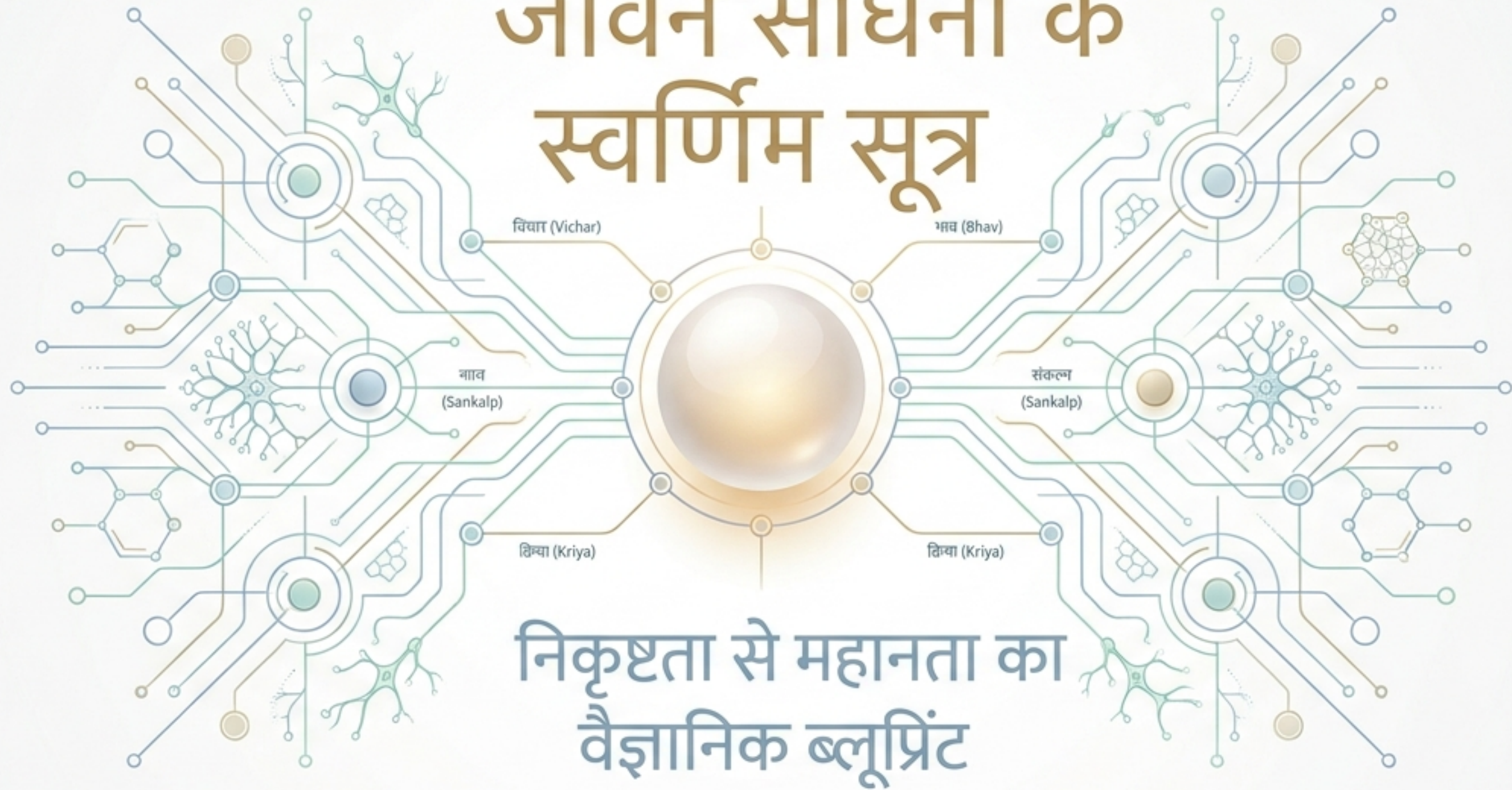
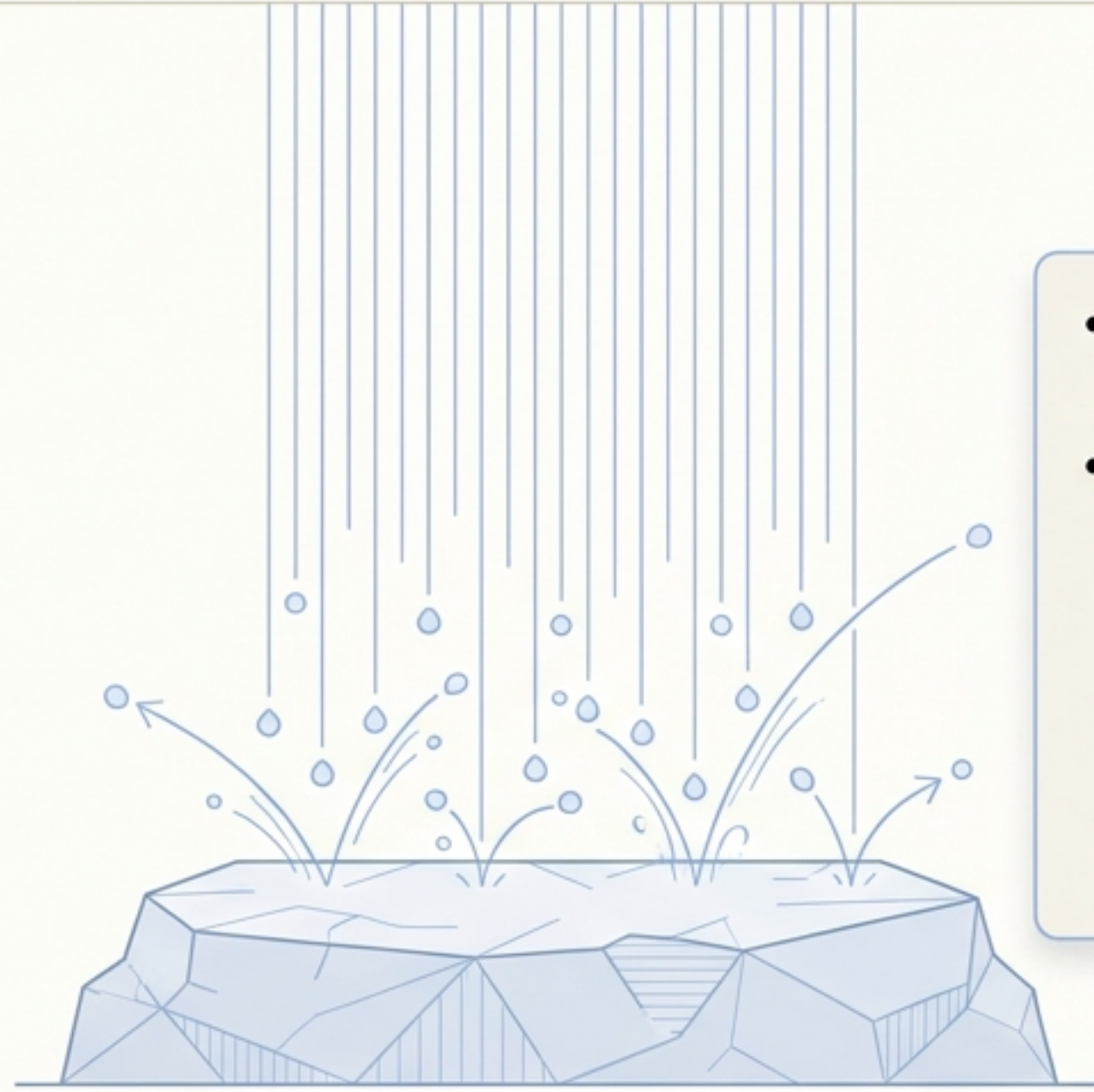


जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र



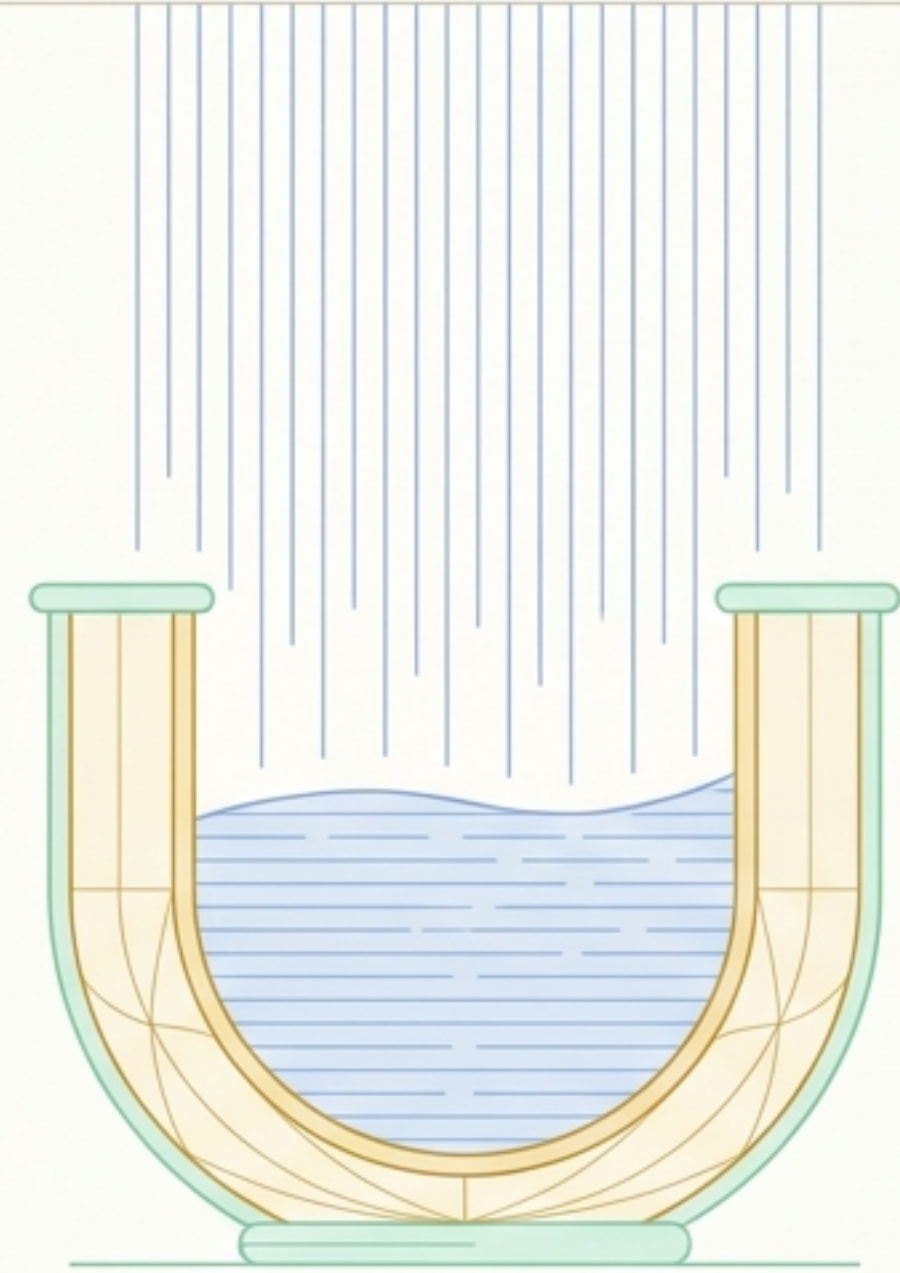
मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूपांतरण की नियमावली

पात्रता का विज्ञान: संचय का भौतिक नियम



शून्य संचय

- **प्रकृति निष्पक्ष है:** बादल हर जगह समान रूप से बरसते हैं।
- **पात्रता ही परिणाम तय करती है:** वर्षा का जल रेगिस्तान या चट्टानों पर नहीं रुकता, वह केवल गहराई वाले स्थानों में संचित होता है। ऊर्जा का उपयोग करने के लिए मनोवैज्ञानिक गहराई आवश्यक है।



पूर्ण संचय

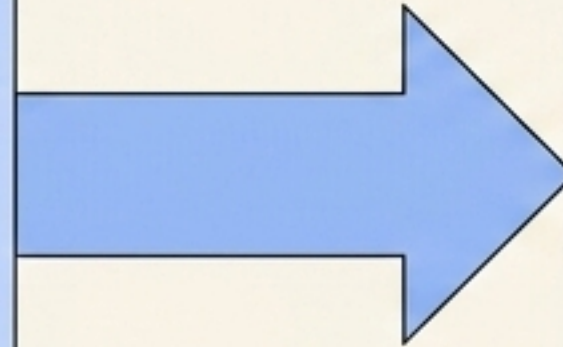
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

रूपांतरण के भौतिक नियम

डिटॉक्सिफिकेशन

धुलाई -> रँगाई

मैले दर्पण में छवि नहीं दिखती।
कुसंस्कारों की धुलाई के बिना उत्कृष्ट
विचारों की रँगाई संभव नहीं है।

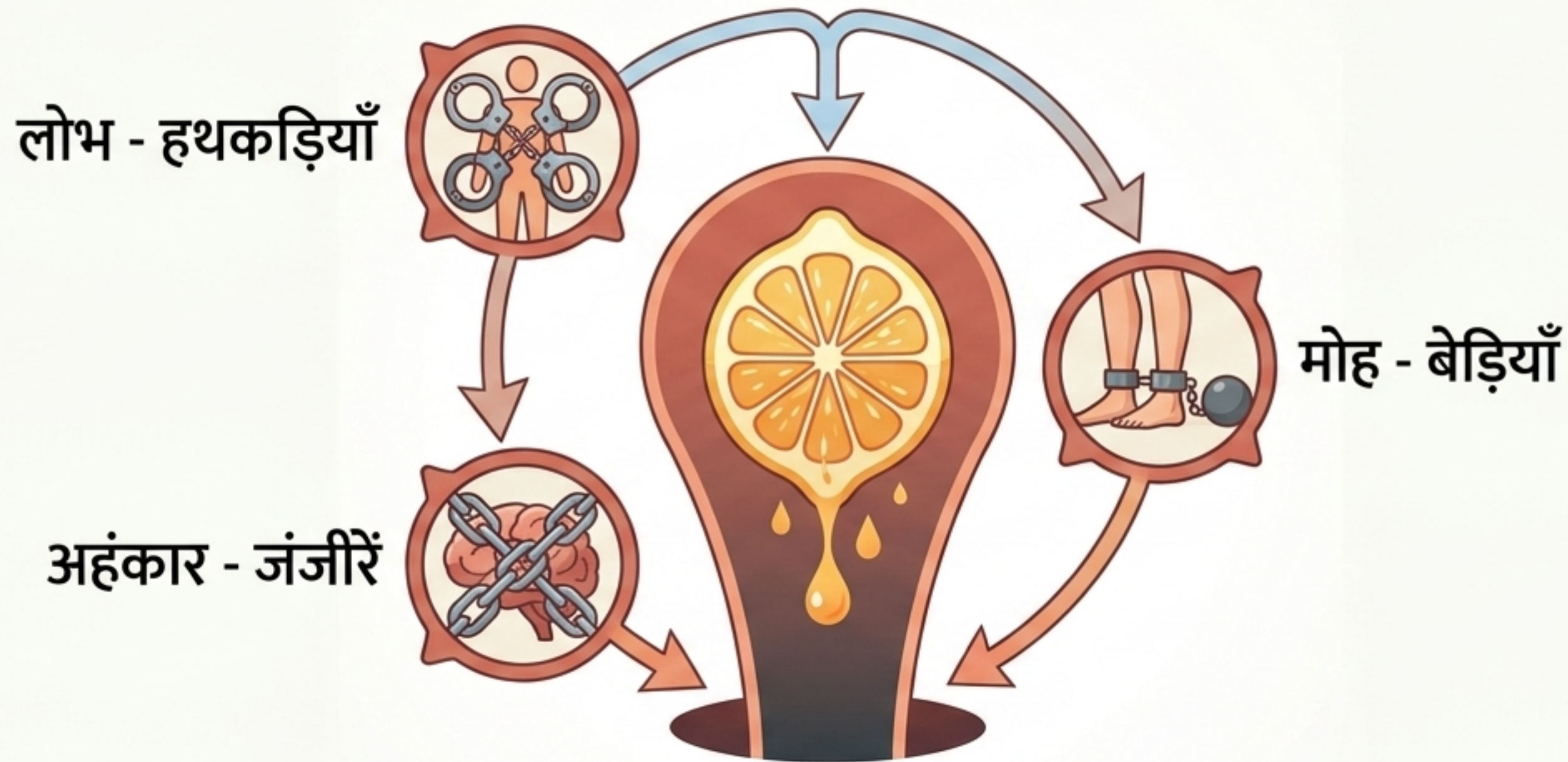


पुनर्गठन

गलाई -> ढलाई

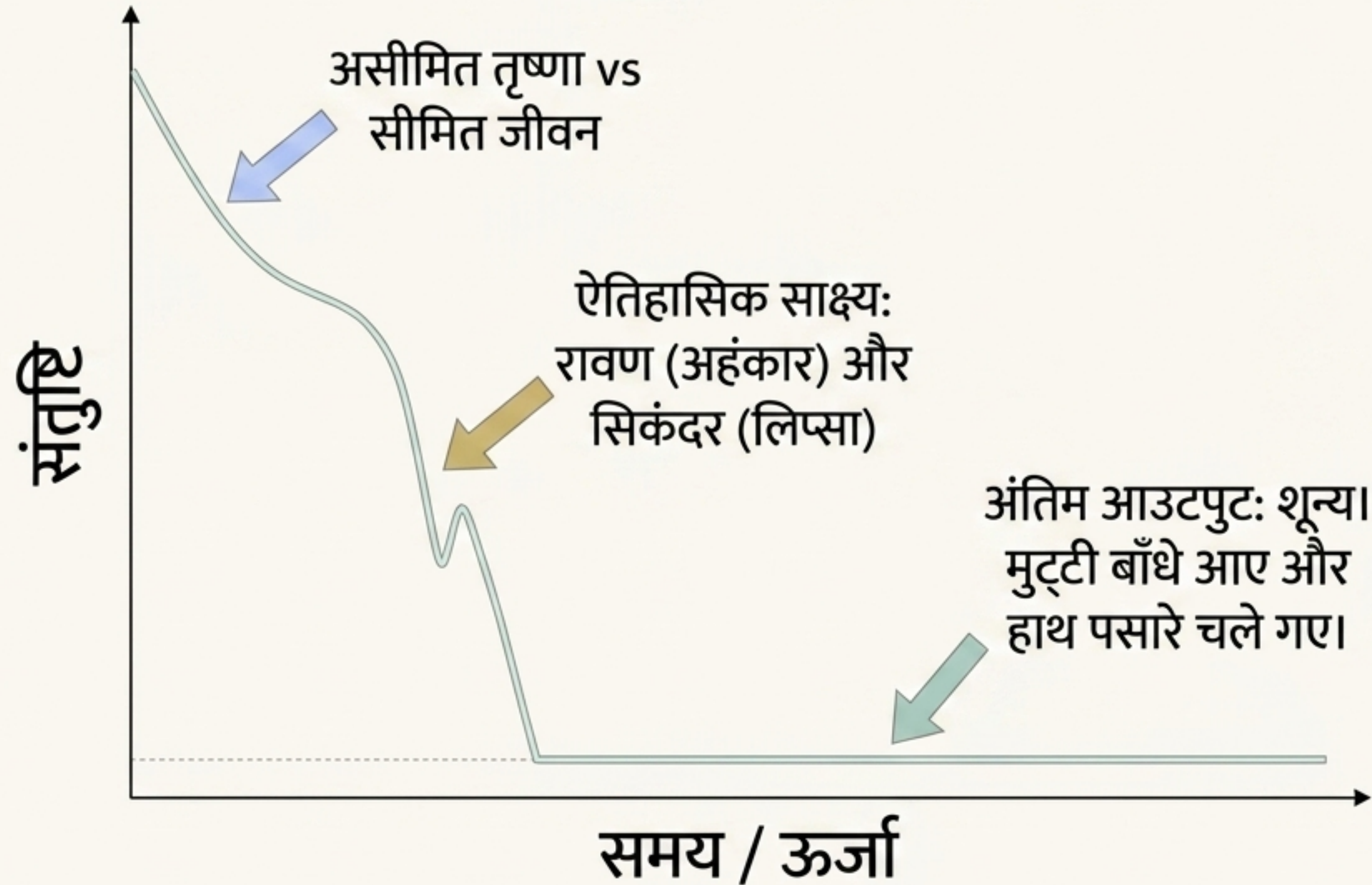
धातु को नए साँचे में ढालने से पहले
उसका पिघलना (अहंकार का गलन)
अनिवार्य है।

पतन का चक्र: ऊर्जा का क्षरण



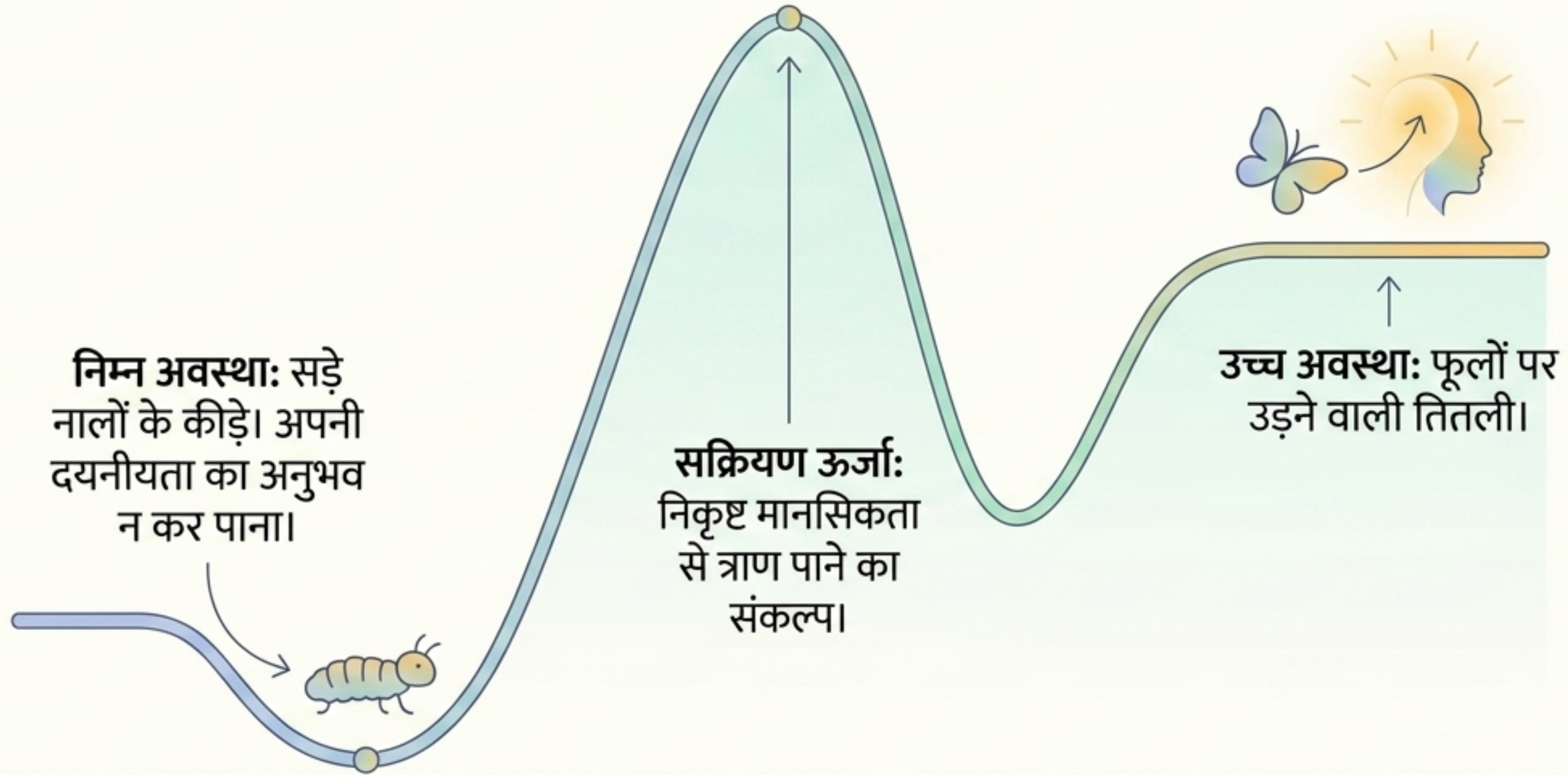
जैविक ऊर्जा का ह्रास: ये दुष्प्रवृत्तियाँ एक परजीवी लूप बनाती हैं। वासनाएँ आदमी के स्वास्थ्य, संतुलन और आयु को नीबू की तरह निचोड़ कर उसे निस्तेज छिलके में बदल देती हैं।

भौतिक विजय का भ्रम



स्वार्थ सिद्धि की ललक 'जादुई राजमहल' जैसी है—जहाँ जल की जगह थल और थल की जगह जल दिखाई देता है (व्यामोह का सम्मोहन)।

मानसिकता का विकास: कीड़े से तितली तक



मनुष्य केवल भटका हुआ देवता है। मल-आवरण हटते ही नर-कीटक, 'महामानव' में रूपांतरित हो जाता है।

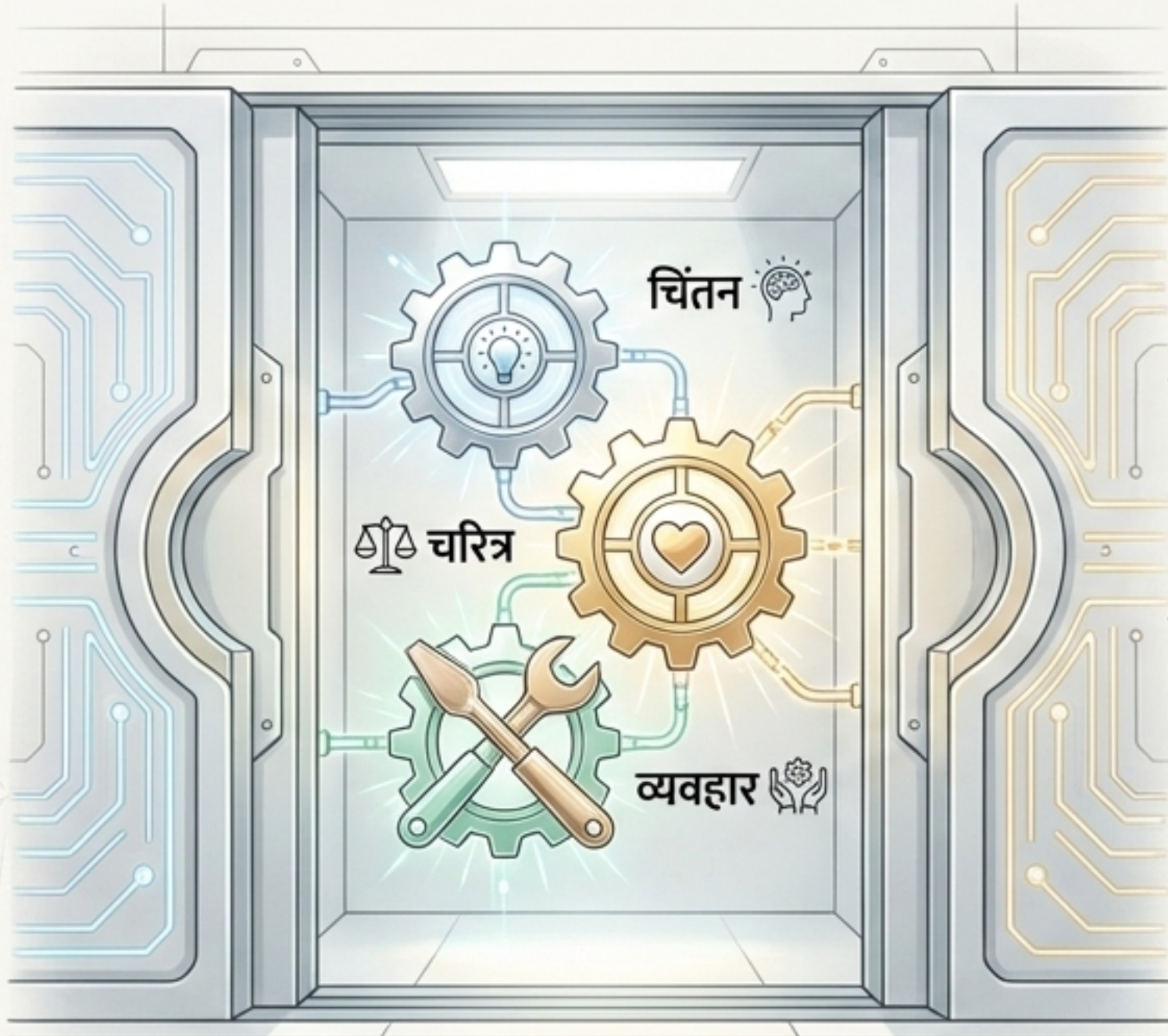


युग-सन्धि काल: ज्ञान शरीर का जागरण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहिष्ठाने गा कि मेरे ज्ञान शरीर के को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित

श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा का शस्त्रागार



- **सामान्य काल:** अस्त्र-शस्त्र 'मालखाने' में जमा रहते हैं।

- **आपत्तिकाल / युग-सन्धि काल:** प्रतिभाशालियों को नए सिरे से प्रयुक्त किया जाना है। हथियारों पर धार रखी जाती है।

- **अस्तित्व रक्षा का तंत्र:** चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता ही इस बदलते समय में टिके रहने का एकमात्र आधार है। अनगढ़ लोगों का कूड़ा-कचरा बाहर फेंक दिया जाएगा।


ऐतिहासिक बेसलाइन शिफ्ट



प्राचीन काल



उच्च शारीरिक स्वास्थ्य



अखाड़ों में कड़ी कसरत



वर्तमान काल



अपंग, रुग्ण और दुर्बल पीढ़ी



आध्यात्मिक प्रयोग और अभ्यास

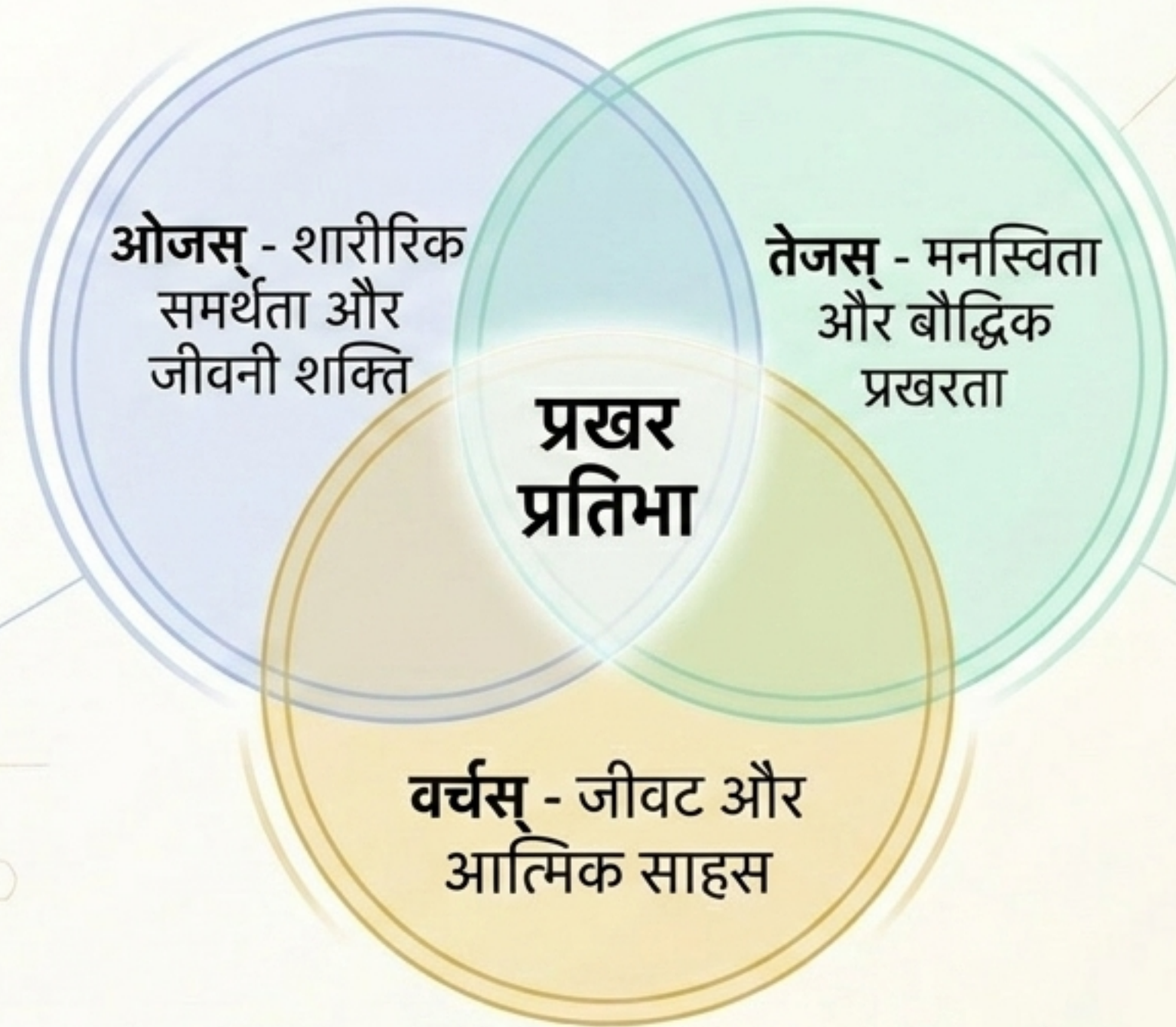
आज के समय में सीधे योग-तप की जगह व्यक्तित्व निर्माण की प्रारंभिक साधनाएँ अनिवार्य हैं—हाईस्कूल पास करने से पहले कॉलेज की योजना बनाना व्यर्थ है।

जीवन ही सर्वोच्च कल्पवृक्ष है



बाहरी देवताओं से चमत्कार की भीख माँगने के बजाय, अपनी काया में ही देवत्व के दर्शन करें। 'घड़े में ऊँट खोजने' की भ्रांति से बचें।

उत्कृष्टता का त्रिकोण



ये वे दिव्य संपदाएँ हैं जिनसे संसार के हाट-बाजार में कुछ भी खरीदा जा सकता है।

व्यावहारिक धर्म का विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दैनिक ऑप्टिमाइज़ेशन प्रोटोकॉल: पंचशीलों का अभ्यास



प्राचीन काल की कठिन तप-साधना के समतुल्य आज का व्यावहारिक धर्म।

उच्च मानसिकता के चार सूत्र

उच्च मानसिकता

समझदारी:
तात्कालिक
आकर्षण पर
अंकुश और
दूरगामी
परिणामों का
चिंतन।

ईमानदारी:
प्रामाणिकता
और जन-जन
का विश्वास
अर्जित करने
की पूंजी।

जिम्मेदारी:
कर्तव्यों का
निर्वहन और
शौर्य का
विकास।

बहादुरी:
जोखिम उठाने
का साहस।
कायरता का
त्याग।

ये ९ गुण (५ शील + ४ सूत्र) नवधा भक्ति का आधुनिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक स्वरूप हैं।

ज्ञान शरीर का विस्तार: एक युगानुकूल मिशन

सच्ची आध्यत्मिकता एक वैज्ञानिक आत्म-नियंत्रण है।
अब समय आ गया है कि इस नव-जीवन की विचारधारा को 'चल ज्ञान मंदिरों'
और स्व-परिवर्तन के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जाए।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)